लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥१॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥२॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥३॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥४॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥५॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥६॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥७॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥८॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

LINGASHTAKAM

brahmamurāri surārchita liṅgaṃ nirmalabhāsita śōbhita liṅgam l
janmaja duḥkha vināśaka liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 1 ll

dēvamuni pravarārchita liṅgaṃ kāmadahana karuṇākara liṅgam l
rāvaṇa darpa vināśana liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 2 ll

sarva sugandha sulēpita liṅgaṃ buddhi vivardhana kāraṇa liṅgam l
siddha surāsura vandita liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 3 ll

kanaka mahāmaṇi bhūṣita liṅgaṃ phaṇipati vēṣṭita śōbhita liṅgam l
dakṣasuyajña vināśana liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 4 ll

kuṅkuma chandana lēpita liṅgaṃ paṅkaja hāra suśōbhita liṅgam l
sañchita pāpa vināśana liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 5 ll

dēvagaṇārchita sēvita liṅgaṃ bhāvai-rbhaktibhirēva cha liṅgam l
dinakara kōṭi prabhākara liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 6 ll

aṣṭadaḻōparivēṣṭita liṅgaṃ sarvasamudbhava kāraṇa liṅgam l
aṣṭadaridra vināśana liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 7 ll

suraguru suravara pūjita liṅgaṃ suravana puṣpa sadārchita liṅgam l
parātparaṃ paramātmaka liṅgaṃ tatpraṇamāmi sadāśiva liṅgam ll 8 ll

liṅgāṣṭakamidaṃ puṇyaṃ yaḥ paṭhēśśiva sannidhau l
śivalōkamavāpnōti śivēna saha mōdatē ll

शिव पंचाक्षर स्तोत्र

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय

शिवाय गौरीवदनाब्जबृंदा
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमूनीन्द्र देवार्चिता शेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमावाप्नोति शिवेन सह मोदते

Shiva Panchakshara Stotram

nagendraharaya trilochanaya
bhasmangaragaya mahesvaraya
nityaya suddhaya digambaraya
tasmai na karaya namah shivaya

mandakini salila chandana charchitaya
nandisvara pramathanatha mahesvaraya
mandara pushpa bahupushpa supujitaya
tasmai ma karaya namah shivaya

shivaya gauri vadanabja brnda
suryaya dakshadhvara nashakaya
sri nilakanthaya Vrshadhvajaya
tasmai shi karaya namah shivaya

vashistha kumbhodbhava gautamarya
munindra devarchita shekharaya
chandrarka vaishvanara lochanaya
tasmai va karaya namah shivaya

yagna svarupaya jatadharaya
pinaka hastaya sanatanaya
divyaya devaya digambaraya
tasmai ya karaya namah shivaya

panchaksharamidam punyam yah pathechchiva
sannidhau shivalokamavapnoti sivena saha modate

श्री शिव चालीसा

।।दोहा।।
श्री गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान। कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत संतन प्रतिपाला॥भाल चंद्रमा सोहत नीके। कानन कुंडल नागफनी के॥

अंग गौर शिर गंग बहाये। मुंडमाल तन छार लगाये॥ वस्त्र खाल बाघंबर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे॥

मैना मातु की ह्वै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि न्यारी॥ कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥

नंदि गणेश सोहै तहं कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे॥ कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ॥

देवन जबहीं जाय पुकारा। तब ही दुख प्रभु आप निवारा॥ किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी॥

तुरत षडानन आप पठायउ। लवनिमेष महं मारि गिरायउ॥ आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा॥

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन बचाई॥ किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरब प्रतिज्ञा तसु पुरारी॥

दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं॥ वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई॥

प्रगट उदधि मंथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये विहाला॥ कीन्ह दया तहं करी सहाई। नीलकंठ तब नाम कहाई॥

पूजन रामचंद्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥ सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी॥

एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई॥ कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर॥

जय जय जय अनंत अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी॥ दुष्ट सकल नित मोहि सतावै । भ्रमत रहे मोहि चैन आवै॥

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहि आन उबारो॥ लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आन उबारो॥

मातु पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोई॥ स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी॥

धन निर्धन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वो फल पाहीं॥ अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥

शंकर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन॥ योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। नारद शारद शीश नवावैं॥

नमो नमो जय नमो शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥ जो यह पाठ करे मन लाई। ता पार होत है शंभु सहाई॥

ऋनिया जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी॥ पुत्र हीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥

पंडित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे ॥ त्रयोदशी ब्रत करे हमेशा। तन नहीं ताके रहे कलेशा॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे। शंकर सम्मुख पाठ सुनावे॥ जन्म जन्म के पाप नसावे। अन्तवास शिवपुर में पावे॥

कहे अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी॥ जय जय जय जय त्रिपुरारी आये हैं हम शरण तुम्हारी ॥

॥दोहा॥

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीसा।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश॥
मगसर छठि हेमंत ऋतु, संवत चौसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण॥

Shri Shiv Chalisa (English)

Jai Ganesh Girija Suvan Mangal Mul Sujan
Kahat Ayodhya Das Tum Dey Abhaya Varadan

Jai Girija Pati Dinadayala Sada Karat Santan Pratipala
Bhala Chandrama Sohat Nike Kanan Kundal Nagaphani Ke

Anga Gaur Shira Ganga Bahaye Mundamala Tan Chhara Lagaye
Vastra Khala Baghambar Sohain Chhavi Ko Dekha Naga Muni Mohain

Maina Matu Ki Havai Dulari Vama Anga Sohat Chhavi Nyari
Kara Trishul Sohat Chhavi Bhari Karat Sada Shatrun Chhayakari

Nandi Ganesh Sohain Tahan Kaise Sagar Madhya Kamal Hain Jaise
Kartik Shyam Aur Gana rauo Ya Chhavi Ko Kahi Jata Na Kauo

Devan Jabahi Jaya Pukara Tabahi Dukha Prabhu Apa Nivara
Kiya Upadrav Tarak Bhari Devan Sab Mili Tumahi Juhari

Turata Shadanana Apa Pathayau Luv nimesh Mahi Mari Girayau
Apa Jalandhara Asura Sanhara Suyash Tumhara Vidit Sansara

Tripurasur Sana Yudha Machai Sabhi Kripakar Lina Bachai
Kiya Tapahin Bhagiratha Bhari Purahi Pratigya Tasu Purari

Darpa chod Ganga thabb Aayee Sevak Astuti Karat Sadahin
Veda Nam Mahima Tav Gai Akatha Anandi Bhed Nahin Pai

Pragati Udadhi Mantan te Jvala Jarae Sura-Sur Bhaye bihala
Mahadev thab Kari Sahayee, Nilakantha Tab Nam Kahai

Pujan Ramchandra Jab Kinha Jiti Ke Lanka Vibhishan Dinhi
Sahas Kamal Men Ho Rahe Dhari Kinha Pariksha Tabahin Purari

Ek Kamal Prabhu Rakheu goyee Kushal-Nain Pujan Chahain Soi
Kathin Bhakti Dekhi Prabhu Shankar Bhaye Prasanna Diye-Ichchhit Var

Jai Jai Jai Anant Avinashi Karat Kripa Sabake Ghat Vasi

Dushta Sakal Nit Mohin Satavai Bhramat Rahe Man Chain Na Avai

Trahi-Trahi Main Nath Pukaro Yahi Avasar Mohi Ana Ubaro
Lai Trishul Shatrun Ko Maro Sankat Se Mohin Ana Ubaro

Mata Pita Bhrata Sab Hoi Sankat Men Puchhat Nahin Koi
Swami Ek Hai Asha Tumhari Ai Harahu Ab Sankat Bhari

Dhan Nirdhan Ko Deta Sadahin Arat jan ko peer mitaee,
Astuti Kehi Vidhi Karai Tumhari Shambhunath ab tek tumhari

Dhana Nirdhana Ko Deta Sadaa Hii Jo Koi Jaanche So Phala Paahiin
Astuti Kehi Vidhi Karon Tumhaarii Kshamahu Naatha Aba Chuuka Hamaarii

Shankar Ho Sankat Ke Nashan Vighna Vinashan Mangal Karan
Yogi Yati Muni Dhyan Lagavan Sharad Narad Shisha Navavain

Namo Namo Jai Namah Shivaya Sura Brahmadik Par Na Paya
Jo Yah Patha Karai Man Lai To kon Hota Hai Shambhu Sahai

Riniyan Jo Koi Ho Adhikari Patha Karai So Pavan Hari
Putra-hin Ichchha Kar Koi Nischaya Shiva Prasad Tehin Hoi

Pandit Trayodashi Ko Lavai Dhyan-Purvak Homa Karavai
Trayodashi Vrat Kare Hamesha Tan Nahin Take Rahe Kalesha

Dhuupa Diipa Naivedya Chadhaave Shankara Sammukha Paatha Sunaave
Janma Janma Ke Paapa Nasaave Anta Dhaama Shivapura Men Paave

Doha

Nitya Nema kari Pratahi Patha karau Chalis
Tum Meri Man Kamana Purna Karahu Jagadisha

अथ नामावलिः

ॐ शिवाय नमः ।

ॐ महेश्वराय नमः ।

ॐ शम्भवे नमः ।

ॐ पिनाकिने नमः ।

ॐ शशिशेखराय नमः ।

ॐ वामदेवाय नमः ।

ॐ विरूपाक्षाय नमः ।

ॐ कपर्दिने नमः ।

ॐ नीललोहिताय नमः ।

ॐ शङ्कराय नमः । १०

ॐ शूलपाणिने नमः ।

ॐ खट्वाङ्गिने नमः ।

ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ।

ॐ शिपिविष्टाय नमः ।

ॐ अम्बिकानाथाय नमः ।

ॐ श्रीकण्ठाय नमः ।

ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।

ॐ भवाय नमः ।

ॐ शर्वाय नमः ।

ॐ त्रिलोकेशाय नमः । २०

ॐ शितिकण्ठाय नमः ।

ॐ शिवाप्रियाय नमः ।

ॐ उग्राय नमः ।

ॐ कपालिने नमः ।

ॐ कामारये नमः ।

ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ।

ॐ गङ्गाधराय नमः ।

ॐ ललाटाक्षाय नमः ।

ॐ कलिकालाय नमः ।

ॐ कृपानिधये नमः । ३०

ॐ भीमाय नमः ।

ॐ परशुहस्ताय नमः ।

ॐ मृगपाणये नमः ।

ॐ जटाधराय नमः ।

ॐ कैलासवासिने नमः ।

ॐ कवचिने नमः ।

ॐ कठोराय नमः ।

ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ।

ॐ वृषाङ्काय नमः ।

ॐ वृषभारूढाय नमः । ४०

ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ।

ॐ सामप्रियाय नमः ।

ॐ स्वरमयाय नमः ।

ॐ त्रयीमूर्तये नमः ।

ॐ अनीश्वराय नमः ।

ॐ सर्वज्ञाय नमः ।

ॐ परमात्मने नमः ।

ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः ।

ॐ हविषे नमः ।

ॐ यज्ञमयाय नमः । ५०

ॐ सोमाय नमः ।

ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ।

ॐ सदाशिवाय नमः ।

ॐ विश्वेश्वराय नमः ।

ॐ वीरभद्राय नमः ।

ॐ गणनाथाय नमः ।

ॐ प्रजापतये नमः ।

ॐ हिरण्यरेतसे नमः ।

ॐ दुर्धर्षाय नमः ।

ॐ गिरिशाय नमः । ६०

ॐ अनघाय नमः ।

ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ।

ॐ भर्गाय नमः ।

ॐ गिरिधन्वने नमः ।

ॐ गिरिप्रियाय नमः ।

ॐ कृत्तिवाससे नमः ।

ॐ पुरारातये नमः ।

ॐ भगवते नमः ।

ॐ प्रमथाधिपाय नमः ।

ॐ मृत्युञ्जयाय नमः । ७०

ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ।

ॐ जगद्व्यापिने नमः ।

ॐ जगद्गुरुवे नमः ।

ॐ व्योमकेशाय नमः ।

ॐ महासेनजनकाय नमः ।

ॐ चारुविक्रमाय नमः ।

ॐ रुद्राय नमः ।

ॐ भूतपतये नमः ।

ॐ स्थाणवे नमः ।

ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः । ८०

ॐ दिगम्बराय नमः ।

ॐ अष्टमूर्तये नमः ।

ॐ अनेकात्मने नमः ।

ॐ सात्त्विकाय नमः ।

ॐ शुद्धविग्रहाय नमः ।

ॐ शाश्वताय नमः ।

ॐ खण्डपरशवे नमः ।

ॐ रजसे नमः ।

ॐ पाशविमोचनाय नमः ।

ॐ मृडाय नमः । ९०

ॐ पशुपतये नमः ।

ॐ देवाय नमः ।

ॐ महादेवाय नमः ।

ॐ अव्ययाय नमः ।

ॐ हरये नमः ।

ॐ भगनेत्रभिदे नमः ।

ॐ अव्यक्ताय नमः ।

ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ।

ॐ हराय नमः ।

ॐ पूषादन्तभिदे नमः । १००

ॐ अव्यग्राय नमः ।

ॐ सहस्राक्षाय नमः ।

ॐ सहस्रपदे नमः ।

ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ।

ॐ अनन्ताय नमः ।

ॐ तारकाय नमः ।

ॐ परमेश्वराय नमः ।

ॐ त्रिलोचनाय नमः । १०८

॥ इति श्रीशिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

SHIVA ASHTOTTARA SATA NAMAVALI

ōṃ śivāya namaḥ

ōṃ mahēśvarāya namaḥ

ōṃ śambhavē namaḥ

ōṃ pinākinē namaḥ

ōṃ śaśiśēkharāya namaḥ

ōṃ vāmadēvāya namaḥ

ōṃ virūpākṣāya namaḥ

ōṃ kapardinē namaḥ

ōṃ nīlalōhitāya namaḥ

ōṃ śaṅkarāya namaḥ (10)

ōṃ śūlapāṇayē namaḥ

ōṃ khaṭvāṅginē namaḥ

ōṃ viṣṇuvallabhāya namaḥ

ōṃ śipiviṣṭāya namaḥ

ōṃ ambikānāthāya namaḥ

ōṃ śrīkaṇṭhāya namaḥ

ōṃ bhaktavatsalāya namaḥ

ōṃ bhavāya namaḥ

ōṃ śarvāya namaḥ

ōṃ trilōkēśāya namaḥ (20)

ōṃ śitikaṇṭhāya namaḥ

ōṃ śivāpriyāya namaḥ

ōṃ ugrāya namaḥ

ōṃ kapālinē namaḥ

ōṃ kaumārayē namaḥ

ōṃ andhakāsura sūdanāya namaḥ

ōṃ gaṅgādharāya namaḥ

ōṃ lalāṭākṣāya namaḥ

ōṃ kālakālāya namaḥ

ōṃ kṛpānidhayē namaḥ (30)

ōṃ bhīmāya namaḥ

ōṃ paraśuhastāya namaḥ

ōṃ mṛgapāṇayē namaḥ

ōṃ jaṭādharāya namaḥ

ōṃ ktelāsavāsinē namaḥ

ōṃ kavacinē namaḥ

ōṃ kaṭhōrāya namaḥ

ōṃ tripurāntakāya namaḥ

ōṃ vṛṣāṅkāya namaḥ

ōṃ vṛṣabhārūḍhāya namaḥ (40)

ōṃ bhasmōddhūḻita vigrahāya namaḥ

ōṃ sāmapriyāya namaḥ

ōṃ svaramayāya namaḥ

ōṃ trayīmūrtayē namaḥ

ōṃ anīśvarāya namaḥ

ōṃ sarvajñāya namaḥ

ōṃ paramātmanē namaḥ

ōṃ sōmasūryāgni lōcanāya namaḥ

ōṃ haviṣē namaḥ

ōṃ yajñamayāya namaḥ (50)

ōṃ sōmāya namaḥ

ōṃ pañcavaktrāya namaḥ

ōṃ sadāśivāya namaḥ

ōṃ viśvēśvarāya namaḥ

ōṃ vīrabhadrāya namaḥ

ōṃ gaṇanāthāya namaḥ

ōṃ prajāpatayē namaḥ

ōṃ hiraṇyarētasē namaḥ

ōṃ durdharṣāya namaḥ

ōṃ girīśāya namaḥ (60)

ōṃ giriśāya namaḥ

ōṃ anaghāya namaḥ

ōṃ bhujaṅga bhūṣaṇāya namaḥ

ōṃ bhargāya namaḥ

ōṃ giridhanvanē namaḥ

ōṃ giripriyāya namaḥ

ōṃ kṛttivāsasē namaḥ

ōṃ purārātayē namaḥ

ōṃ bhagavatē namaḥ

ōṃ pramadhādhipāya namaḥ (70)

ōṃ mṛtyuñjayāya namaḥ

ōṃ sūkṣmatanavē namaḥ

ōṃ jagadvyāpinē namaḥ

ōṃ jagadguravē namaḥ

ōṃ vyōmakēśāya namaḥ

ōṃ mahāsēna janakāya namaḥ

ōṃ cāruvikramāya namaḥ

ōṃ rudrāya namaḥ

ōṃ bhūtapatayē namaḥ

ōṃ sthāṇavē namaḥ (80)

ōṃ ahirbhuthnyāya namaḥ

ōṃ digambarāya namaḥ

ōṃ aṣṭamūrtayē namaḥ

ōṃ anēkātmanē namaḥ

ōṃ svāttvikāya namaḥ

ōṃ śuddhavigrahāya namaḥ

ōṃ śāśvatāya namaḥ

ōṃ khaṇḍaparaśavē namaḥ

ōṃ ajāya namaḥ

ōṃ pāśavimōcakāya namaḥ (90)

ōṃ mṛḍāya namaḥ

ōṃ paśupatayē namaḥ

ōṃ dēvāya namaḥ

ōṃ mahādēvāya namaḥ

ōṃ avyayāya namaḥ

ōṃ harayē namaḥ

ōṃ pūṣadantabhidē namaḥ

ōṃ avyagrāya namaḥ

ōṃ dakṣādhvaraharāya namaḥ

ōṃ harāya namaḥ (100)

ōṃ bhaganētrabhidē namaḥ

ōṃ avyaktāya namaḥ

ōṃ sahasrākṣāya namaḥ

ōṃ sahasrapādē namaḥ

ōṃ apapargapradāya namaḥ

ōṃ anantāya namaḥ

ōṃ tārakāya namaḥ

ōṃ paramēśvarāya namaḥ (108)

शिव रूद्राष्टकम

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदः स्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाश माकाशवासं भजेऽहम् ॥

निराकार मोंकार मूलं तुरीयं, गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालुं, गुणागार संसार पारं नतोऽहम् ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं, मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा, लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा॥

चलत्कुण्डलं शुभ्र नेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रिय शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

प्रचण्डं प्रकष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशम् ।
त्रयशूल निर्मूलनं शूल पाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भाव गम्यम् ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सच्चिनान्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावद् सुखं शांति सन्ताप नाशं, प्रसीद प्रभो सर्वं भूताधि वासं ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजा, न तोऽहम् सदा सर्वदा शम्भू तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं, प्रभोपाहि आपन्नामामीश शम्भो ॥

रूद्राष्टकं इदं प्रोक्तं विप्रेण हर्षोतये
ये पठन्ति नरा भक्तयां तेषां शंभो प्रसीदति।।

Shri Rudrashtakam in English

Namami Shamishaan Nirvaan Roopam|
Vibhum Vyapakam Brahm Veda Swaroopam||
Nijam Nirgunam Nirvikalpam Nireeham|
Chidakaash Maakash Vaasam Bhajeham||

Nirakaar Omkar Moolam Turiyam|
Giragyaan Goteet Meesham Girisham||
Karaalam Mahakaal Kaalam Kripalam|
Gunagaar Sansaar Paaram Naatoham||

Tusharaadri Sankaash Gauram Gabheeram|
Manobhoot Koti Prabha Shi Shareeram||
Sfooranmauli Kallolini Charu Ganga|
Lasadbhaal Baalendu Kanthe Bhujanga||

Chalatkundalam Bhru Sunethram Vishaalam|
Prasannananam Neelkantham Dayalam||
Mrigadheesh Charmaambaram Mundamaalam|
Priyam Shankaram Sarvanaatham Bhajaami||

Prachandam Prakrishtam Pragalbham Paresham|
Akhandam Ajambhaanukoti Prakaasham||
Trayahshool Nirmoolanam Shoolpaanim|
Bhajeham Bhawani Patim Bhaav Gamyam||

Kalateet Kalyaan Kalpantkaari|
Sada Sajjanaanand Daata Purari||
Chidaanand Sandoh Mohapahari|
Praseed Praseed Prabho Manmathari||

Nayaavad Umanath Paadaravindam|
Bhajanteeha Lokey Parewa Naraanaam||
Na Tawatsukham Shaantisantapnaasham|
Praseed Prabho Sarvabhootadhivaasam||

Na Jaanaami Yogam Japam Naiva Poojaam|
Na Toham Sada Sarvada Shambhu Tubhhyam||
Jarajanm Dukhhaudya Taapatyamaanam|
Prabho Paahi Aapan Namaami Shri Shambho||

|| Rudrashtakamidam Proktam Vipren Hartoshaye ||
|| Ye Pathanti Naraa Bhaktaya Teyshaam Shambhu Praseedati ||

SHIV ARTI

जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा । ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Jai Shiv Omkara, Om jai Shiv Omkara, Brahma Vishnu Sadashiv Arddhagni Dhara.

Om Jai Shiv Omkara

एकानन चतुरानन पंचानन राजे । हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Ekanan Chaturanan Panchanan Rajai, Hansanan Garudasan Vrishvahan Sajai.
Om Jai Shiv Omkara

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे । त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Do Bhuj Char Chaturbhuj Das Bhuj Ati Sohe, Trigun Roop Nirakhta Tribhuvan Jan Mohe.
Om Jai Shiv Omkara

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी । त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Akshaymala Vanmala Mundmala Dhari, Chadan Mrigmad Sohai Bhale Shashi Dhari.
Om Jai Shiv Omkara

श्वेतांबर पीतांबर बाघंबर अंगे । सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Shvetambar Pitambar Baghambar Ange, Sankadik Garunadik Bhootadik Sange.
Om Jai Shiv Omkara

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी । सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Kar ke Mashya Kamandalu Chakra Trishooldhari, Sukhkari Dukhhari Jag Palankari.
Om Jai Shiv Omkara

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Brahma Vishnu Sadashiv Jaanat Aviveka, Pranvaakshar me Shobhit Yah Tinon Eka.
Om Jai Shiv Omkara

त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोइ नर गावे । कहत शिवानंद स्वामी सुख संपति पावे ॥ ॐ जय शिव ओंकारा

Trigun Swami ji Ki Aarti Jo Koi Nar Gave, Kahat Shivanand Swami Manvanchhit Phal Pave.
Om Jai Shiv Omkara